वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 146 शनिवार 14 नवम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

# शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

## शिक्षा मंत्री ने विभागीय कार्यों एवं बजट घोषणाओं की समीक्षा कर शीघ्र क्रियान्वयन के दिए निर्देश

# नवीन स्टाफिंग पैटर्न से समानीकरण जल्द लागू करने पर जोर

**विद्यालयों के आधारभूत ढांचे, छात्र सुविधाओं, व्यावसायिक शिक्षा एवं डिजिटल शिक्षण से जुड़ी 15 बजट घोषणाओं की प्रगति की समीक्षा**



**जयपुर. शाबाश इंडिया**

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर की अध्यक्षता में शुक्रवार को स्कूल शिक्षा विभाग की विभिन्न योजनाओं, नवीन स्टाफिंग पैटर्न से अध्यापको का समानीकरण लागू करने तथा वर्ष 2026-27 की बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन के संबंध में समीक्षा बैठकें आयोजित हुईं। बैठक में माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ नवीन स्टाफिंग पैटर्न की वर्तमान स्थिति तथा इन्हें लागू करने से संबंधित प्रक्रियाओं पर चर्चा की गई। दिलावर ने अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही शीघ्र पूर्ण कर नवीन स्टाफिंग पैटर्न को जल्द लागू करने के निर्देश दिए। इसी क्रम में स्कूल शिक्षा विभाग की वर्ष 2026-27 की बजट घोषणाओं की समीक्षा बैठक में विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार, भवन निर्माण एवं मरम्मत, विद्यार्थियों को सहायता, व्यावसायिक एवं समावेशी शिक्षा तथा तकनीक आधारित शिक्षण से संबंधित 15 बिंदुओं की प्रगति की बिंदुवार समीक्षा की गई। मंत्री दिलावर ने अधिकारियों को बजट घोषणाओं का समयबद्ध एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

### विद्यालय भवनों के निर्माण एवं मरम्मत कार्यों की समीक्षा

विद्यालयों की मरम्मत एवं जीर्णोद्धार के लिए 250 करोड़ रुपये के 1,941 कार्यों की वित्तीय सहमति प्राप्त हुई है। इनमें से 1,934 कार्यों की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी कर कार्य प्रारंभ कर दिए गए हैं। इसी प्रकार, 300 जर्जर विद्यालय भवनों के स्थान पर नवीन भवन निर्माण के लिए 409 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्राप्त हुई है। इनमें से 147 कार्यों के कार्यादेश जारी कर निर्माण कार्य प्रारंभ किए जा चुके हैं।

### विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के हित में महत्वपूर्ण पहल

कक्षा एक से पांच तक के विद्यार्थियों की पढ़ाई में अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से तैयार 'निपुण कैलेंडर' की छपाई पूर्ण होने तथा वितरण की प्रक्रिया जारी होने की जानकारी दी गई। वहीं, कक्षा नौ में प्रवेश लेने वाली एनएफएसए परिवारों की छात्राओं को ई-वाउचर के स्थान पर खुली निविदा के माध्यम से साइकिल खरीदकर वितरित करने के लिए वित्तीय सहमति प्राप्त हो चुकी है। बैठक में चयनित मेधावी विद्यार्थियों को टैबलेट अथवा लैपटॉप खरीदने के लिए 20 हजार रुपये तक की सहायता उपलब्ध करवाने की घोषणा की प्रगति की भी समीक्षा की गई। ई-वाउचर के स्थान पर प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के माध्यम से सहायता राशि उपलब्ध करवाने के लिए प्रस्ताव वित्त विभाग को भेजा गया है।

### व्यावसायिक एवं समावेशी शिक्षा को मिलेगा प्रोत्साहन

बैठक में अजमेर, भरतपुर, बीकानेर, जोधपुर एवं कोटा में मॉडल संदर्भ केंद्र स्थापित करने के लिए स्थान चयन की प्रक्रिया पूर्ण होने तथा आवश्यक उपकरणों एवं संचालन संबंधी तैयारियों की जानकारी दी गई। 'स्कूल टू वर्क' कार्यक्रम के तहत जिला मुख्यालयों पर 41 विद्यालयों को चिह्नित करने की प्रक्रिया तथा 500 अतिरिक्त विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा प्रारंभ करने के प्रस्ताव की स्थिति भी प्रस्तुत की गई। इन 500 विद्यालयों में 100 विद्यालय ग्रीन एनर्जी तथा 400 विद्यालय अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए चिह्नित किए गए हैं।

### विद्यार्थियों की स्वास्थ्य सुविधाओं पर जोर

विद्यालयों के साथ संचालित 22,746 आंगनबाड़ी केंद्रों में खेल सामग्री एवं 'जादुई पिटारा' उपलब्ध करवाने के प्रस्ताव की समीक्षा की गई। जयपुर एवं कोटा में चयनित विद्यालयों तथा उनसे सह-स्थित आंगनबाड़ी केंद्रों में चेहरे की पहचान आधारित उपस्थिति प्रणाली लागू करने के लिए प्रस्तावित पायलट की तैयारियों पर भी चर्चा हुई। इसी प्रकार, प्रदेश के लगभग 75 हजार विद्यार्थियों की नेत्र जांच करवाने एवं आवश्यकतानुसार चश्मे उपलब्ध करवाने की बजट घोषणा के संबंध में नोडल अधिकारियों के नामांकन तथा प्रारंभिक स्क्रीनिंग के दिशा-निर्देश जारी किए जाने की जानकारी दी गई। इस कार्य को चिकित्सा विभाग को हस्तांतरित करने की सहमति के लिए पत्रावली भी भेजी गई है। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभागीय योजनाओं एवं बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन में गति लाई जाए। उन्होंने नवीन स्टाफिंग पैटर्न एवं समानीकरण की प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण करने के साथ ही विद्यार्थियों के हित से जुड़े सभी कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करने पर जोर दिया।

### सीएम-राइज विद्यालयों की तैयारी

एक हजार विद्यालयों में एआई आधारित पर्सनलाइज्ड लर्निंग लैब स्थापित करने की घोषणा के तहत प्रथम चरण में 500 विद्यालयों का चयन पूर्ण कर लिया गया है। वहीं, सीएम-राइज योजना के अंतर्गत 400 विद्यालयों का चयन कर वित्तीय सहमति के लिए प्रस्ताव भेजा गया है। इसके अतिरिक्त 10,848 शिक्षकों को एआई प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्राप्त 11.34 करोड़ रुपये के प्रस्ताव के परीक्षण की प्रगति से भी अवगत करवाया गया।



# राज्यपाल से विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने की मुलाकात

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े से शुक्रवार को लोकभवन में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा एवं न्यायाधिपति प्रमिल कुमार माथुर सहित बड़ी संख्या में विशिष्टजनों ने मुलाकात कर दीपावली की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। लोकभवन में भी राज्यपाल को दीपावली की शुभकामनाएं देने के लिए विशिष्टजनों के पहुंचने का सिलसिला जारी रहा। राज्यपाल बागड़े ने सभी का अभिनंदन करते हुए उन्हें दीपावली के नववर्ष की शुभकामनाएं दीं।

# कहरवा की लय में शिल्पग्राम ने रची लोक, राग और आधुनिक सुरों की नई दुनिया

## डॉ. विजय सिद्ध के निर्देशन में दूसरी शाम ने परंपरा और प्रयोग के बीच रचा आत्मीय संगीत-संवाद



उदयपुर. शाबाश इंडिया

हवाला ग्राम स्थित शिल्पग्राम का मुक्ताकाशी रंगमंच शुक्रवार शाम उस सांगीतिक चौपाल में बदल गया, जहां राजस्थान की मिट्टी, रागों की संवेदना और आधुनिक वाद्यों की चमक एक ही लय में सांस ले रही थी। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के चार दिवसीय शरद रंग की दूसरी शाम कहरवा फ्यूजन ने श्रोताओं को केवल धुनें नहीं सुनाईं, बल्कि लोक से शास्त्र और शास्त्र से समकालीन संगीत तक की सरस यात्रा कराई। इसमें हर धुन उस रात एक नई सांस्कृतिक परत खोलती चली गई।

### ताल बनी संस्कृतियों का सेतु

अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तबला वादक डॉ. विजय सिद्ध की परिकल्पना और निर्देशन में प्रस्तुति का केंद्र आठ मात्राओं वाली कहरवा ताल रही। डॉ. सिद्ध ने इसे विश्व की प्राचीनतम और सबसे लोकप्रिय तालों में बताया, जिसकी सरल, चंचल तथा गतिमान प्रकृति गंभीर शास्त्रीय रचनाओं को भी श्रोता के निकट ले आती है। यही कारण रहा कि प्रस्तुति में परंपरा का अनुशासन और लोक की आत्मीयता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि सहयात्री नजर आए।

### मांड की महक से सूफी रंग तक

कार्यक्रम का प्रारंभ मेवाड़ की पहचान मांड केसरिया बालम पर आधारित मांड कहरवा से हुआ। इसके बाद राग देस का देस कहरवा, लोकगीत हिचकी पर लोक कहरवा और बुल्ले शाह के कलाम इश्क में सर न दिया ने मन के अलग-अलग रंग खोले। राग जोग पर आधारित जोग कहरवा में गंभीरता उतरी, जबकि कहरवा फॉर विक्ट्री ने वीर रस की गूंज के साथ परिसर में उत्साह का संचार किया।

### रागों की रेखा पर जुगलबंदी

राग भोपाली और लोकगीत गोरबंद के सम्मिलन से बना भोपाली कहरवा श्रोताओं के लिए आकर्षण रहा। अनेक तालवाद्यों के संवाद से सजा सबरंग कहरवा और राग यमन पर सूफी रचना छाप तिलक सब छीनी आधारित सूफी कहरवा ने संध्या को चरम तक पहुंचाया। यह वह क्षण था, जब एक ही ताल भाषा, क्षेत्र और शैली की परिधियां पार कर साझा अनुभूति में बदल गई।

### मंच पर साजों का जीवंत संवाद

डॉ. विजय सिद्ध के साथ शास्त्रीय गायक पं. रमेश मेवाल, लोक गायक उस्ताद बुंदू खां लंगा और सितार वादक पं. हरिहरशरण भट्ट ने स्वर और रागों की गरिमा रची। ड्रम पर योगेश शर्मा, गिटार पर जतिन वर्मा तथा की-बोर्ड पर एस. वल्लू ने आधुनिक ध्वनियों का विस्तार दिया। मोरचंग और भपंग पर हाकिम खां, खड़ताल पर सोनू खां लंगा तथा ढोलक पर बरकत खां ने लोक की धड़कन को जीवंत रखा। तबला, सितार और देशज वाद्यों के बीच ड्रम, गिटार व की-बोर्ड का मेल इस फ्यूजन की सबसे अलग पहचान बना।

### उत्सव की सोच हुई साकार

केंद्र निदेशक डॉ. अश्विन एम. दलवी ने कहा कि पारंपरिक और आधुनिक वाद्यों के अभिनव संयोजन ने दूसरी संध्या को स्मरणीय बना दिया। उनके अनुसार शरद रंग का मंतव्य विभिन्न कलारूपों को एक मंच पर लाकर परस्पर संवाद की संभावना पैदा करना है और कहरवा फ्यूजन ने उसी सोच को प्रभावी संगीतात्मक स्वर दिया। यह प्रयोग भारतीय संगीत की जीवंत ग्रहणशीलता का भी प्रमाण बना। बता दें, आमजन के लिए शिल्पग्राम में शाम 6 बजे से प्रवेश निःशुल्क है।

### हास्य कवि सम्मेलन आज

उत्सव की तीसरी शाम शनिवार, 14 नवम्बर को ख्यात हास्य कवि अरुण जैमिनी सहित अन्य कवियों का कवि सम्मेलन होगा।

### लजीज व्यंजनों का उत्सव जारी

शिल्पांगन में 15 नवम्बर तक खाद्य उत्सव जारी रहेगा। यहां दाल-बाटी-चूरमा, लखनवी गलावटी वेज कबाब, जगन्नाथपुरी प्रसाद, पश्चिम बंगाल की पीठा-पुली, बिहार का लिट्टी-चोखा, हरियाणवी जलेबा, पंजाब का अमृतसरी कुलछा, उत्तर प्रदेश की चाट और अवध की मिठास, गुजरात का पातरा, महाराष्ट्र की पूरनपोली, उत्तराखंड की सेल रोटी-चटनी तथा हैदराबादी बिरयानी आमजन को देश की स्वाद-यात्रा कराएंगे।

राग भोपाली और लोकगीत गोरबंद के सम्मिलन से बना भोपाली कहरवा श्रोताओं के लिए आकर्षण रहा। अनेक तालवाद्यों के संवाद से सजा सबरंग कहरवा और राग यमन पर सूफी रचना छाप तिलक सब छीनी आधारित सूफी कहरवा ने संध्या को चरम तक पहुंचाया।

# रसोई से खुला सभ्यता का पन्ना: शरद रंग में भारतीय खाद्य विरासत पर संवाद, पाक-ज्ञान को सहेजने का आह्वान

उदयपुर. शाबाश इंडिया

शिल्पग्राम के बंजारा मंच पर शुक्रवार सुबह 'शरद रंग' की दूसरी सुबह ने भोजन को महज स्वाद नहीं, बल्कि स्मृतियों, भूगोल और सामाजिक इतिहास की भाषा के रूप में सामने रखा। भारतीय खानपान पर केंद्रित संवाद में वक्ताओं ने कहा कि रसोई समाज की वह जीवित पाठशाला है, जहां मौसम, परंपरा, स्वास्थ्य और रिश्ते एक साथ पकते हैं।

## लुप्त होती दादी-नानी की रसोई

शेफ डॉ. राजीव गोयल, डॉ. संगीता धर, अक्षराज जोधा, निशांत चौबे, राहुल वाली, कासी विश्वनाथन और डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने तेज जीवन-गति, छोटे परिवार और पीढ़ियों के घटते संवाद पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि दादी-नानी की रसोई में सुरक्षित अनेक पारंपरिक विधियां लिखित अथवा डिजिटल अभिलेख के अभाव में चुपचाप विलुप्त हो रही हैं। मौसमी खाद्य ज्ञान और घरेलू संरक्षण की कला को सहेजना समय की जरूरत है।

## अचार में छिपी दूरदर्शिता

अचार की उत्पत्ति और संरक्षण पद्धतियों के उदाहरण से बताया गया कि भारतीय रसोई ने स्वाद के साथ उपयोगिता, ऋतु और स्वास्थ्य का संतुलन बहुत पहले स्थापित कर लिया था। तमिल संगम साहित्य सहित प्राचीन खाद्य ग्रंथों के उल्लेख ने इस पाक-परंपरा की ऐतिहासिक गहराई उभारी। वक्ताओं ने जोर दिया कि पुराने व्यंजनों को केवल रेसिपी नहीं, बल्कि लोकज्ञान की विरासत मानकर पढ़ना होगा।



## प्रदेशों की थाली, पहचान की कहानी

कश्मीरी पंडित भोजन को रूढ़ धारणाओं से परे समझने, मेवाड़ के भोजन पर जलवायु, इतिहास और जीवन-पद्धति के प्रभाव तथा झारखंड के जनजातीय आहार में प्रकृति-सहजीवी ज्ञान की चर्चा ने संवाद को बहुआयामी बनाया। औपनिवेशिक दौर में भारतीय व्यंजनों के नामों और पहचान में आए परिवर्तनों पर भी विचार-विमर्श हुआ।

## स्वास्थ्य और हुनर की नई राह

आयुर्वेद, संतुलित आहार और स्वास्थ्य के पारस्परिक संबंधों के साथ युवाओं के लिए शेफ के रूप में उभरते अवसरों पर उपयोगी मार्गदर्शन दिया गया। वक्ताओं ने कहा कि पाक-कला अब केवल घरेलू कौशल नहीं, बल्कि शोध, उद्यमिता और सृजनात्मक करियर की संभावनाओं से भरा क्षेत्र है।

## साझी जिम्मेदारी का संदेश

उप निदेशक पवन अमरावत ने दीप प्रज्ज्वलन किया। संचालन सिद्धांत भटनागर ने किया। अधीक्षण अभियंता सी. एल. सालवी तथा सहायक निदेशक वित्त एवं लेखा दुर्गेश चांदवानी उपस्थित रहे। सत्र ने यह संदेश छोड़ा कि भोजन की विविधता बचाना, उसके पीछे के ज्ञान को दर्ज करना और उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाना सांस्कृतिक संरक्षण का जरूरी कार्य है। शनिवार 14 नवम्बर को प्रातः 10 बजे पाक-कला विशेषज्ञ आमजन से स्वाद और सेहत पर पुनः संवाद करेंगे।

# आराधना में उत्साह और त्याग में अनासक्ति हो, तभी साधना सार्थक: युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

## संवेग और निर्वेद को बताया साधना का आधार, ज्ञान पंचमी पर शांतिभवन में होंगे विशेष जाप और चौबीसी के आयोजन

भीलवाड़ा.शाबाश इंडिया

जिनवाणी का श्रवण तभी सार्थक होता है, जब उससे साधना के प्रति संवेग और भौतिक आकर्षणों के प्रति निर्वेद का भाव जागृत हो। बाहरी त्याग के साथ मन की आसक्ति भी समाप्त हो, तभी आराधना जीवन में वास्तविक रूप से उतरती है। यह विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शांतिभवन में आयोजित धर्मसभा में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने उत्तराध्ययन सूत्र के 18वें अध्ययन की गाथा का विवेचन करते हुए कहा कि जीवन, यौवन, रूप, सौंदर्य और भौतिक सुख-सुविधाएं बिजली की चमक के समान क्षणभंगुर हैं। इस अस्थिरता का बोध जब मन में संवेग और निर्वेद उत्पन्न करता है, तभी जिनवाणी का श्रवण फलदायी बनता है। उन्होंने कहा कि संवेग केवल भावना नहीं, बल्कि साधना के प्रति प्रबल और सम्यक उत्साह है। नवकारशी, सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान, सेवा अथवा



छोटा-सा नियम भी प्रसन्नता और लगन के साथ किया जाए तो उसका महत्व बढ़ जाता है। आराधना कितनी की, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसे किस भाव से किया गया। युवाचार्यश्री ने कहा कि धर्म यदि केवल करना पड़ता है, ऐसी मानसिकता से किया जाए तो उसका वास्तविक मर्म खोने लगता है। नियमों का पालन भीतर की प्रसन्नता और आत्मिक प्रेरणा से होना चाहिए। संवेग ही साधक को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान व्यवहार में आत्मीयता की जगह औपचारिकता और हिसाब-किताब बढ़ता जा रहा है। उपहार की कीमत, आयोजन का खर्च और बाहरी दिखावा अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं, जबकि भावनाएं पीछे छूटती जा रही हैं। यही प्रवृत्ति यदि धर्म में प्रवेश कर जाए तो आराधना भी केवल बाहरी क्रिया बनकर रह जाती है। निर्वेद का अर्थ स्पष्ट करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि इसका अर्थ संसार से घृणा करना नहीं, बल्कि भौतिक आकर्षणों के प्रति अनासक्त होना है। कोई वस्तु छोड़ दी, लेकिन मन उसी में अटका रहा तो त्याग केवल बाहरी हुआ, आंतरिक नहीं। बाहर से छोड़ना सहज है, लेकिन भीतर से उसका मोह समाप्त करना ही साधना की वास्तविक कसौटी है। उपवास का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि केवल आहार छोड़ देना पर्याप्त नहीं है। यदि मन अगले स्वाद अथवा छोड़ी हुई वस्तु की प्रतीक्षा में लगा रहे तो उपवास का नियम पूरा हो सकता है, लेकिन निर्वेद का भाव उत्पन्न नहीं होता। त्याग तभी सार्थक है, जब मन के भीतर का आग्रह भी धीरे-धीरे समाप्त होने लगे। उन्होंने कहा कि संवेग और निर्वेद साधना के दो प्रमुख आधार हैं। संवेग साधक को श्रेष्ठ मार्ग की ओर आगे बढ़ाता है, जबकि निर्वेद उसे बाहरी आकर्षणों की पकड़ से मुक्त करता है। एक साधना को गति देता है तो दूसरा उसे स्थिरता प्रदान करता है। इसी प्रकार कटुता या द्वेष के कारण बनाई गई दूरी भी निर्वेद नहीं है।

## राजनीति

# छत से सड़क तक, बुनियादी सुविधाओं के इंतजार में गांव

गांव में विकास की तस्वीर केवल पक्के मकानों और सड़कों के निर्माण से पूरी नहीं होती, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ तब सामने आता है, जब हर परिवार को सुरक्षित छत और हर मौसम में आवागमन के लिए बेहतर सड़क उपलब्ध हो। लेकिन देश के कई पहाड़ी और दूरदराज के गांवों में आज भी लोग इन बुनियादी सुविधाओं के इंतजार में हैं। कहीं कमजोर छत बरसात में चिंता बढ़ाती है तो कहीं खराब सड़क अस्पताल, बाजार और अन्य जरूरी सेवाओं तक पहुंचने में बाधा बनती है। उत्तराखंड के बागेश्वर जिले के गरुड़ ब्लॉक का पिंगलो गांव भी ऐसी ही समस्याओं से जूझ रहा है। जिला मुख्यालय से करीब 42 किलोमीटर और गरुड़ ब्लॉक से लगभग 34 किलोमीटर दूर स्थित इस गांव की पंचायत में दर्ज आबादी करीब 937 है। यहां लगभग 350 मकान हैं। प्राकृतिक सुंदरता से घिरे इस गांव में आवास, सड़क और रात के समय रोशनी की कमी ग्रामीणों के लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है। गांव की महिलाओं के लिए कच्चे मकानों की समस्या केवल बरसात में छत टपकने तक सीमित नहीं है, बल्कि हर मौसम में असुरक्षा का एहसास कराती है। 32 वर्षीय पूजा खाती का कहना है कि उनके आसपास रहने वाले कई परिवारों को अब तक आवास योजना का लाभ नहीं मिला है। वहीं 35 वर्षीय मधुली देवी और 39 वर्षीय उमा देवी भी अपने कच्चे घरों की स्थिति को लेकर चिंतित हैं। उनका कहना है कि बारिश में छत से पानी टपकता है और घर की मजबूती को लेकर डर बना रहता है। एक समय छत को गिरने से बचाने के लिए लकड़ी का सहारा तक लेना पड़ा। यह स्थिति सरकारी आवास योजनाओं की पहुंच पर सवाल खड़े करती है। प्रधानमंत्री आवास योजना का उद्देश्य जरूरतमंद परिवारों को सुरक्षित घर उपलब्ध कराना है, लेकिन यदि पात्र परिवार ही इसका लाभ पाने से वंचित रह जाएं तो योजना का उद्देश्य अधूरा रह जाता है। ग्रामीणों के अनुसार, कई जरूरतमंद परिवारों को योजनाओं की जानकारी और आवेदन प्रक्रिया का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। ऐसे में पात्रता की पहचान और लाभार्थियों तक सही जानकारी पहुंचाना जरूरी है। गांव की दूसरी बड़ी समस्या सड़क की है। बेहतर सड़क और नियमित यातायात नहीं होने से ग्रामीणों को रोजमर्रा के कामों में परेशानी होती है।

## संपादकीय

# सामाजिक परिवर्तन या वोट का गणित?

उत्तर प्रदेश की राजनीति में 12 नवंबर 2026 का दिन एक नए राजनीतिक समीकरण के आगाज के रूप में दर्ज हो गया। लखनऊ में एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी और आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने हाथ मिलाकर ''सामाजिक परिवर्तन मोर्चा'' बनाने का ऐलान किया। मोर्चे ने प्रदेश की सभी 403 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने और चंद्रशेखर आजाद को मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित



करने का फैसला किया है। इसकी पहली रैली 28 नवंबर को लखनऊ के रमाबाई अंबेडकर मैदान में प्रस्तावित है। गठबंधन का नारा है ''जय मीम, जय भीम''। इसके केंद्र में मुस्लिम और दलित एकता की राजनीति है। उत्तर प्रदेश में दलित आबादी लगभग 21 प्रतिशत और मुस्लिम आबादी करीब 19 प्रतिशत मानी जाती है। दोनों समुदायों की संयुक्त आबादी लगभग 40 प्रतिशत है। प्रदेश की 41 विधानसभा सीटों पर दलित-मुस्लिम मतदाताओं की संयुक्त हिस्सेदारी 50 प्रतिशत से अधिक बताई जाती है। जाहिर है, इसी सामाजिक समीकरण को राजनीतिक ताकत में बदलने की रणनीति पर दोनों नेताओं ने दांव लगाया है लेकिन असली सवाल यही है कि क्या आबादी का यह गणित चुनावी समर्थन में बदलेगा या मोर्चा महज वोटों के बिखराव का माध्यम बनकर रह जाएगा? इस गठबंधन के पीछे तीन प्रमुख राजनीतिक कारण दिखाई देते हैं। पहला, समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के पीडीए यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक फॉर्मूले से उपजा असंतोष। अखिलेश यादव ने सामाजिक भागीदारी का नारा जरूर दिया, लेकिन दलित और मुस्लिम समाज के एक वर्ग को लगता है कि राजनीतिक प्रतिनिधित्व, टिकट वितरण और नेतृत्व में उसे अपेक्षित हिस्सेदारी नहीं मिली। चंद्रशेखर 2024 में नगीना से सांसद बनकर अपनी राजनीतिक ताकत साबित कर चुके हैं। ऐसे में वे अब अपनी स्वतंत्र पहचान और व्यापक राजनीतिक आधार तैयार करना चाहते हैं। दूसरी ओर, ओवैसी लंबे समय से मुस्लिम राजनीतिक प्रतिनिधित्व का सवाल उठाते रहे हैं। दूसरा कारण बसपा के कमजोर होते राजनीतिक प्रभाव से पैदा हुआ खालीपन है। मायावती की पार्टी 2007 जैसी स्थिति में नहीं है। दलित मतदाताओं का एक हिस्सा दूसरे राजनीतिक विकल्पों की ओर बढ़ा है। चंद्रशेखर इसी बिखरे हुए जनाधार को अपने साथ जोड़ना चाहते हैं। हालांकि भीम आर्मी के जरिए उनकी पहचान मजबूत हुई है, लेकिन पूरे प्रदेश में संगठनात्मक विस्तार अभी बड़ी चुनौती है। तीसरा कारण बिहार का चुनावी अनुभव है। दोनों नेताओं ने पिछले वर्ष बिहार विधानसभा चुनाव में भी साथ मिलकर चुनावी मैदान में उतरने का प्रयोग किया था। भले ही वहां उन्हें उल्लेखनीय सीटें नहीं मिलीं, लेकिन इस साझेदारी ने उन्हें उत्तर प्रदेश में बड़े स्तर पर गठबंधन आजमाने का अवसर दिया। मोर्चे की सबसे बड़ी ताकत चंद्रशेखर को मुख्यमंत्री पद का चेहरा बनाना है। इससे यह संदेश देने की कोशिश हुई है कि गठबंधन केवल मुस्लिम राजनीति तक सीमित नहीं, बल्कि दलित नेतृत्व को केंद्र में रखता है। **-राकेश जैन**

## परिदृश्य

# आर्थिक संतुलन समझने की जरूरत

देश में खुदरा महंगाई दर का अक्टूबर में बढ़कर 6.09 प्रतिशत तक पहुंचना अर्थव्यवस्था और आम उपभोक्ता दोनों के लिए चिंता का विषय है। सितंबर में यह दर 5.54 प्रतिशत थी। इस तरह अक्टूबर में महंगाई भारतीय रिजर्व बैंक की निर्धारित छह प्रतिशत की ऊपरी सीमा को पार कर गई। प्याज, लहसुन, दूध, अंडे और अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुओं के दाम बढ़ने से घरेलू बजट पर दबाव पड़ा है। हालांकि महंगाई को केवल नकारात्मक दृष्टि से देखने के बजाय इसके पीछे मांग, आपूर्ति और बाजार की परिस्थितियों को समझना भी आवश्यक है। भारत जैसे विशाल देश में महंगाई का संबंध केवल उत्पादन लागत से नहीं, बल्कि त्योहारों, मौसम, परिवहन और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से भी जुड़ा होता है। दीपावली जैसे बड़े पर्व पर बाजारों में रौनक बढ़ना भारतीय अर्थव्यवस्था की सक्रियता का प्रमाण है। इस दौरान कपड़े, आभूषण, मिठाइयां, इलेक्ट्रॉनिक सामान, वाहन और घरेलू उपयोग की वस्तुओं की मांग तेजी से बढ़ती है। व्यापारियों, छोटे दुकानदारों और कारीगरों के कारोबार में भी तेजी आती है। मांग के अनुरूप आपूर्ति नहीं होने पर कुछ वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होना बाजार की सामान्य प्रक्रिया है। दीपावली केवल धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व नहीं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों को गति देने वाला अवसर भी है। इस दौरान खरीदारी बढ़ने से उद्योगों में उत्पादन, परिवहन और व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है। छोटे कारोबारियों और श्रमिकों को रोजगार के अवसर मिलते हैं। विशेष रूप से सूरत जैसे औद्योगिक शहरों में कपड़ा, हीरा और अन्य व्यापारिक क्षेत्रों से जुड़े लाखों लोगों की आजीविका त्योहारों के दौरान बढ़ने वाली आर्थिक गतिविधियों से प्रभावित होती है। इस दृष्टि से बाजार में बढ़ती मांग अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत भी है। महंगाई को समझने में मांग और आपूर्ति का सिद्धांत महत्वपूर्ण है। जब किसी वस्तु की मांग बढ़ती है और उपलब्धता सीमित रहती है, तो उसकी कीमत बढ़ सकती है। इसके विपरीत उत्पादन अधिक और मांग कम होने पर कीमतों में गिरावट आती है। हालांकि त्योहारों की आड़ में जमाखोरी, कालाबाजारी और अनावश्यक मूल्य वृद्धि को उचित नहीं ठहराया जा सकता। व्यापारियों की जिम्मेदारी है कि वे बढ़ती मांग का अनुचित लाभ उठाकर उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ न डालें। ग्रामीण और शहरी महंगाई का प्रभाव भी अलग-अलग दिखाई देता है। ग्रामीण परिवार अपनी आय का बड़ा हिस्सा खाद्यान्न, सब्जियों और दैनिक जरूरतों पर खर्च करते हैं। इसलिए खाद्य वस्तुओं के दाम बढ़ने से उनका बजट सीधे प्रभावित होता है। वहीं शहरी परिवारों को किराया, शिक्षा, चिकित्सा और परिवहन जैसे खर्चों का सामना करना पड़ता है। सीमित और निश्चित आय वाले परिवारों के लिए महंगाई अधिक चुनौतीपूर्ण बन जाती है। भारतीय रिजर्व बैंक महंगाई नियंत्रित करने के लिए मौद्रिक नीतियों का सहारा लेता है। ब्याज दरों में बदलाव के माध्यम से बाजार में कर्ज और खर्च की गति को प्रभावित किया जाता है। लेकिन ब्याज दरें बढ़ने से गृह ऋण, वाहन ऋण और कारोबारी कर्ज भी महंगे हो सकते हैं। इसलिए महंगाई पर नियंत्रण के लिए केवल ब्याज दरों में बदलाव पर्याप्त नहीं है। कृषि उत्पादन बढ़ाने, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति मजबूत करने, भंडारण सुविधाओं में सुधार और परिवहन लागत कम करने पर भी ध्यान देना होगा। अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां भी भारतीय बाजार को प्रभावित करती हैं। मध्य पूर्व में तनाव और कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव से परिवहन तथा उत्पादन लागत बढ़ सकती है।

# श्रीगढ़बोर चारभुजानाथ को बारात लेकर भीलवाड़ा पधारने का निमंत्रण देने आज जाएंगे 200 श्रद्धालु

## 16108 श्री तुलसी शालिग्रामजी विवाह महामहोत्सव स्थल पर दूसरे दिन भी चला स्वच्छता के लिए श्रमदान, 17 नवंबर से शुरू होंगे धार्मिक आयोजन



**भीलवाड़ा.शाबाश इंडिया**

सकल सनातन परिवार की प्रेरणा से श्री तुलसी शालिग्राम विवाह समिति के तत्वावधान में धर्मनगरी भीलवाड़ा में 20 नवंबर को आयोजित होने जा रहे 16108 श्री तुलसी शालिग्रामजी विवाह महामहोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से जारी हैं। महोत्सव के तहत श्रीगढ़बोर चारभुजानाथ को मंगल लग्न पत्रिका भेंट कर बारात लेकर भीलवाड़ा पधारने का निमंत्रण देने के लिए शनिवार को 200 श्रद्धालुओं का दल रवाना होगा। महोत्सव के सूत्रधार गौवत्स विष्णुश्री कृष्णतनय महाराज के सान्निध्य में यजमान राधेश्याम-रितेश चेचाणी परिवार, मुख्य आयोजन समिति के पदाधिकारी एवं श्रद्धालु 21 छोटे वाहनों और 2 बसों में सवार होकर गढ़बोर चारभुजा पहुंचेंगे। आजादनगर स्थित मेडिसिटी ग्राउंड पर आयोजित होने वाले इस भव्य महोत्सव में पहली बार राजाधिराज मेवाड़ धणी श्रीगढ़बोर चारभुजानाथ बारात लेकर भीलवाड़ा पधारेंगे। उनके साथ शहर के विभिन्न मंदिरों में विराजित भगवान चारभुजानाथ भी बारात में शामिल होंगे। इन मंदिरों में समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की ओर से पूर्व में ही मंगल लग्न पत्रिका समर्पित की जा चुकी है।

### दूसरे दिन भी जारी रहा श्रमदान अभियान

महोत्सव आयोजन समिति के कार्यालय प्रभारी रजनीकांत आचार्य ने बताया कि आजादनगर स्थित मेडिसिटी ग्राउंड में आयोजन की तैयारियों के तहत सफाई एवं स्वच्छता के लिए श्रद्धालुओं का श्रमदान अभियान दूसरे दिन शुक्रवार को भी जारी रहा। सूर्योदय के कुछ समय बाद ही शहर के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालुओं का कार्यक्रम स्थल पर पहुंचना शुरू हो गया। समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेंद्र कचोलिया ने बताया कि श्रमदान में हर आयु वर्ग के महिला-पुरुषों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और समर्पित भाव से सेवाएं दीं। समिति के संयोजक एस.एन. गग्गड़ सहित अनेक पदाधिकारियों ने भी श्रमदान कर स्वच्छता अभियान में सहभागिता निभाई। श्रमदान का यह अभियान रविवार और सोमवार सुबह भी जारी रहेगा। कार्यक्रम स्थल की सफाई के साथ विशाल पांडाल निर्माण का कार्य भी तेजी से चल रहा है।

### 17 नवंबर से शुरू होंगे धार्मिक आयोजन

समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हेमेन्द्र शर्मा ने बताया कि महामहोत्सव के धार्मिक आयोजन 17 नवंबर से प्रारंभ होंगे। इसके तहत 17 से 19 नवंबर तक प्रतिदिन दोपहर 1 से 4 बजे तक मेडिसिटी ग्राउंड पर रुक्मिणी मंगल कथा का आयोजन किया जाएगा। कथा का वाचन महोत्सव के सूत्रधार गौवत्स विष्णुश्री कृष्णतनय महाराज करेंगे। कथा श्रवण के लिए हजारों श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना को देखते हुए व्यापक व्यवस्थाएं की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि तुलसी विवाह में धर्म माता-पिता बनने के लिए भीलवाड़ा जिले सहित देश और प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से हजारों श्रद्धालुओं ने पंजीयन कराया है। समिति के उपाध्यक्ष हनुमान अग्रवाल ने बताया कि दूसरे दिन श्रमदान एवं कारसेवा में आचार्य योगेन्द्र शर्मा, जगदीश शर्मा, रविकांत शर्मा, खेमराज पनवा, विजेन्द्रसिंह चुण्डावत, परमेश्वर पाराशर, भंवरलाल पारीक, अनिल टेलर, प्रहलाद अजमेरा, कमलकिशोर भारद्वाज, शंकरलाल माली, शिवदयाल मनसावत, प्रेम पुरोहित, श्याम पुरोहित, सुनील विश्नोई, सत्यनारायण गुग्गड़, गोपाल सुवालका, विमला सुथार, मंजू सुथार, ललित सुथार, रामपाल असावा, पुरुषोत्तम काकानी, सरोज नराणीवाल, अनिल नराणीवाल, महेश पांडे, अनिल पारीक, गोपीकिशन पाटोदिया, सत्यनारायण सुवालका, दिनेश माहेश्वरी, रतन शर्मा, घनश्याम शर्मा, शुभम शर्मा, नीरज छीपा और बद्रीलाल सोमानी सहित अनेक श्रद्धालुओं ने सेवाएं दीं।

# कलियुग में प्रभु नाम का सुमिरन करने से मिट जाते हैं सारे पाप, ताप और संताप: आचार्य महेन्द्र कृष्ण शास्त्री

## हनुमान टेकरी पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव, तीसरे दिन कई संत-महात्माओं का मिला सान्निध्य



**भीलवाड़ा.शाबाश इंडिया।** कलियुग में प्रभु के नाम का सुमिरन मात्र करने से सारे पाप, ताप और संताप मिट जाते हैं तथा जीवन में सुखों की प्राप्ति होती है। राम से बड़ा राम का नाम है, जिसकी महिमा अपरंपार है। हरिनाम लेने के लिए समय का इंतजार नहीं करना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति को अपनी दौलत का तो हिसाब रहता है, लेकिन उसके पास कितना समय शेष है, इसका पता नहीं होता। जीवन में एक क्षण का भी भरोसा नहीं है। अंतिम समय में न माया काम आती है और न काया। जीवन में खुशहाल और संतोषी बनना है तो ईश्वर और मृत्यु को सदैव याद रखें तथा उपकार और अपमान को भूल जाएं। ये विचार वृंदावन के प्रख्यात कथावाचक एवं गौरक्षक आचार्य महेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने शुक्रवार को छोटी हरणी स्थित श्री टेकरी के बालाजी काठियाबाबा आश्रम में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव के तीसरे दिन व्यासपीठ से व्यक्त किए। कथा महोत्सव महंत बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में आयोजित हो रहा है। तीसरे दिन जड़भरत संवाद, नृसिंह अवतार और वामन अवतार सहित विभिन्न प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन किया गया। इस अवसर पर कई संत-महात्माओं का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। आचार्य शास्त्री ने कहा कि कलियुग को क्लेश का युग भी कहा जा सकता है, जिसमें भागवत कथा मनुष्य को शांति और आत्मिक आनंद प्रदान करती है। जीवन में जो अपना नहीं है, उस पर भी अधिकार जताने से महाभारत जैसी परिस्थितियां पैदा होती हैं। दूसरों की संपत्ति पर अधिकार जमाने के बजाय अपनी वस्तुओं का भी त्याग करने का भाव पैदा हो जाए तो समझना चाहिए कि जीवन में संतोष प्रदान करने वाले भागवत तत्व का प्रवेश हो गया है। उन्होंने कहा कि यह कलियुग का प्रभाव ही है कि लोग माता-पिता की संपत्ति पर अधिकार जताने के लिए मुकदमेबाजी करते हैं, लेकिन उनकी सेवा का दायित्व निभाने के लिए कोई आगे नहीं आता। उन्होंने कुव्यसनों के त्याग की प्रेरणा देते हुए कहा कि नशा पूरे परिवार को बर्बाद कर देता है। यदि नशा करना ही है तो प्रभु भक्ति का करें। नशीले और निषिद्ध पदार्थों का सेवन मनुष्य के जीवन का पतन करता है। छल-कपट और अनीति से अर्जित संपत्ति कुछ समय तक भले ही टिक जाए, लेकिन अंततः वह विनाश का कारण बनती है। ध्रुव प्रसंग का वर्णन करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि मां से मिलने वाले संस्कार और ज्ञान ही जीवन का आधार होते हैं। इन्हीं संस्कारों से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है और उसके जीवन को सही दिशा मिलती है। मां बच्चे की प्रथम गुरु होती है और वही उसके भविष्य की नींव तैयार करती है। कथा के दौरान भजनों की रसधारा भी निरंतर प्रवाहित होती रही। व्यासपीठ से भजन शुरू होते ही पांडाल में उपस्थित श्रद्धालु भक्तिभाव से झूमने लगे। तीसरे दिन कथा विश्राम के अवसर पर व्यासपीठ की पूजा-अर्चना एवं आरती हरिशेवाधाम के महामंडलेश्वर हंसरामजी महाराज, हाथीभाटा आश्रम के महंत संतदास महाराज, पंचमुखी बालाजी मंदिर रीको के पुजारी मुरारी पांडे, संत गोविन्दराम और संत ईशानराम सहित अन्य संत-महात्माओं ने की। कथा सूत्रधार महंत बनवारीशरण काठियाबाबा और व्यासपीठ पर विराजित आचार्य महेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने सभी संतों का स्वागत किया। व्यासपीठ की आरती कर आशीर्वाद प्राप्त करने वालों में मनोज भट्ट, एसएस गंभीर, सुभाष चुघ, कमल वैष्णानी, मुकेशकुमार, जतनसिंह, नितिन शर्मा, दिलीप चौधरी, सुजीत सिंह, अविनाश, गोपाल चौधरी, विष्णु काबरा, ममता सोनी, उषा शर्मा और आशा सोनी सहित अनेक श्रद्धालु शामिल रहे। कथा श्रवण के लिए छोटी हरणी और भीलवाड़ा के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। श्रीमद्भागवत कथा का वाचन प्रतिदिन दोपहर 1 से शाम 5 बजे तक हनुमान टेकरी परिसर में किया जा रहा है। चौथे दिन शनिवार को श्रीराम एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के प्रसंगों का भावपूर्ण वर्णन होगा। आयोजन को लेकर हरणी महादेव मुख्य मार्ग से हनुमान टेकरी तक विशेष सजावट भी की गई है।

# दीपावली मिलन में मनोरंजन के साथ कर और एआई तकनीक पर हुई चर्चा



## जगदलपुर में सीए सदस्यों का दीपावली मिलन समारोह आयोजित, बॉक्स क्रिकेट और मनोरंजक स्पर्धाओं के साथ टैली प्राइम 7.2 की नई तकनीकों का हुआ प्रदर्शन

**जगदलपुर.शाबाश इंडिया**

इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई) के सीआईआरसी के अंतर्गत जगदलपुर सीपीई चैप्टर की ओर से गुरुवार, 12 नवंबर 2026 को शगुन फार्म्स, जगदलपुर में दीपावली मिलन समारोह का उत्साह और उल्लास के साथ आयोजन किया गया। समारोह में चार्टर्ड अकाउंटेंट्स सदस्यों ने मनोरंजक गतिविधियों के साथ ज्ञानवर्धक एवं तकनीकी सत्र में भाग लेकर आपसी मेलजोल और व्यावसायिक जानकारी का आदान-प्रदान किया। कार्यक्रम की शुरूआत दोपहर 3:30 बजे हुई। प्रथम सत्र में चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एवं सदस्यों के मनोरंजन तथा आपसी सौहार्द को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बॉक्स क्रिकेट सहित विभिन्न मनोरंजक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए खेल गतिविधियों का आनंद लिया। दीपावली मिलन के इस आयोजन ने सदस्यों को व्यस्त पेशेवर दिनचर्या से अलग एक-दूसरे के साथ समय बिताने का अवसर



प्रदान किया। समारोह का दूसरा सत्र शाम 6:30 बजे से 'ज्ञान की पाठशाला' के अंतर्गत आयोजित किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में जबलपुर के पीसी प्लेनेट के संस्थापक नितिन जैन ने जीएसटी अनुपालन, ऑडिट, ई-इनवॉइसिंग और आयकर के नवीनतम नियमों एवं व्यावहारिक चुनौतियों पर विस्तार से जानकारी दी। नितिन जैन ने बताया कि बदलते कर नियमों और तेजी से विकसित होती तकनीक के दौर में चार्टर्ड अकाउंटेंट्स आधुनिक तकनीकी साधनों का उपयोग कर अपने कार्यों को अधिक सरल, तेज और प्रभावी बना सकते हैं। उन्होंने व्यावसायिक प्रक्रियाओं में तकनीकी बदलावों को अपनाने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण टैली प्राइम के नवीनतम संस्करण 7.2 का लाइव प्रदर्शन रहा। सीए विवेक सोनी ने बताया कि सत्र के दौरान नितिन जैन ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित नई सुविधाओं और स्मार्ट ऑटोमेशन का व्यावहारिक प्रदर्शन किया। उन्होंने बताया कि टैली प्राइम 7.2 के माध्यम से लेखांकन, बैंक मिलान, दस्तावेजों से आंकड़ों की प्रविष्टि, जीएसटी अनुपालन और अन्य व्यावसायिक प्रक्रियाओं को अधिक आसान एवं व्यवस्थित बनाया जा सकता है। इस दौरान उपस्थित सीए सदस्यों ने नई तकनीकों की कार्यप्रणाली को समझा और अपने दैनिक पेशेवर कार्यों में उनके उपयोग की संभावनाओं की जानकारी प्राप्त की। वक्ता ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन भविष्य की लेखांकन व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग बनने जा रहे हैं। इन तकनीकों को अपनाकर सीए पेशेवर अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने के साथ ग्राहकों को बेहतर और त्वरित सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन सीए नीरव मोतीवाला ने किया। उपस्थित सदस्यों एवं आमंत्रित अतिथियों का स्वागत वरिष्ठ सीए अविनाश जैन ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन सीए विवेक सोनी ने किया। समारोह के सफल आयोजन में सीए विवेक सोनी (संयोजक) एवं सीए नीरव मोतीवाला (सह-संयोजक) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मनोरंजन, आपसी सौहार्द और व्यावसायिक ज्ञान के अनूठे समन्वय के साथ आयोजित यह दीपावली मिलन समारोह जगदलपुर के चार्टर्ड अकाउंटेंट्स सदस्यों के लिए यादगार और उपयोगी आयोजन साबित हुआ।

# मस्ती, खेल और सीख से भरपूर रहा एंबिशन किड्स का बाल दिवस उत्सव







## नन्हे बच्चों ने नृत्य, मनोरंजक खेलों और कहानियों के साथ मनाया बाल दिवस, चॉकलेट और उपहार पाकर खिले चेहरे

**श्योपुर रोड. शाबाश इंडिया**

श्योपुर रोड स्थित एंबिशन किड्स एकेडमी में शुक्रवार को बाल दिवस की पूर्व संध्या पर रंगारंग किड्स पार्टी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नन्हे बालक-बालिकाओं ने विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर बाल दिवस का उल्लास मनाया। बच्चों ने स्वादिष्ट चॉकलेट पुडिंग और पाइनेपल पुडिंग का आनंद लिया। साथ ही विभिन्न फिल्मी गीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों की ओर से बच्चों के लिए कई रोचक खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसके अलावा अकबर-बीरबल और टॉम एंड जेरी की मनोरंजक कहानियां भी दिखाई गईं, जिन्हें बच्चों ने बड़ी उत्सुकता और आनंद के साथ देखा। पूरे आयोजन में बच्चों की हंसी, उत्साह और उमंग से विद्यालय परिसर गुलजार रहा। संस्थान की प्राचार्या डॉ. अलका जैन ने बताया कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस 14 नवंबर को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन बच्चों को समर्पित है और उनके अधिकारों, शिक्षा, सुरक्षा तथा सर्वांगीण विकास के महत्व को रेखांकित करता है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास और मिल-जुलकर कार्य करने की भावना विकसित करने में सहायक होते हैं। इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ होम्योपैथ चिकित्सक डॉ. एम.एल. जैन 'मणि' ने बच्चों को चॉकलेट और उपहार वितरित कर उनका उत्साह बढ़ाया। उन्होंने सफल आयोजन के लिए सभी शिक्षकों की सराहना करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया। एकेडमी के निदेशक डॉ. मनीष जैन ने अपने संबोधन में कहा कि बाल दिवस हमें याद दिलाता है कि बच्चे केवल परिवार ही नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र का गौरव और भविष्य हैं। उनका उचित पालन-पोषण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देश की प्रगति की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे को प्यार, सुरक्षा, अच्छी शिक्षा और समान अवसर मिलने चाहिए, ताकि वे आत्मविश्वास से भरपूर और जिम्मेदार नागरिक बन सकें। कार्यक्रम के समापन पर उप-आचार्या अनीता जैन ने सभी बच्चों को बाल दिवस की शुभकामनाएं दीं।

# 30 पार की दुल्हन और 32 पार का दूल्हा... आखिर हम अपने ही बच्चों का घर क्यों नहीं बसने दे रहे?

## रिश्ता तलाश रहे हैं या जीवनसाथी के नाम पर परफेक्ट प्रोडक्ट खरीद रहे हैं?

मैं शायद उन गिने-चुने लोगों में से हूं, जो तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आज भी ईमानदारी और मेहनत से रिश्ते जोड़ने का प्रयास करते हैं। वरना आज के दौर में इस झंझट में पड़ना और दोनों परिवारों की अपेक्षाओं के बीच तालमेल बैठाना हर किसी के बस की बात नहीं रह गई है। आज अपने आसपास नजर घुमाइए। आपको 28, 30, 32 और 35 वर्ष की उम्र के कई लड़के-लड़कियां मिल जाएंगे। पढ़े-लिखे हैं, नौकरी कर रहे हैं, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं, देखने में अच्छे हैं, लेकिन शादी नहीं हुई है।

## आखिर ऐसा क्यों?

क्योंकि हमने शादी को शादी रहने ही नहीं दिया। हमने इसे एक सामाजिक रिश्ते के बजाय आर्थिक और सामाजिक सौदे में बदल दिया है। पहले रिश्ते की बातचीत में पूछा जाता था कि लड़का क्या करता है? उसका स्वभाव कैसा है? नशा तो नहीं करता? परिवार कैसा है? लड़की संस्कारी और समझदार है? दोनों एक-दूसरे के साथ जीवन बिता पाएंगे या नहीं? लेकिन आज सवालों की सूची इतनी लंबी हो गई है कि कई बार लगता है कि हम जीवनसाथी नहीं, किसी कंपनी के लिए उम्मीदवार चुन रहे हैं। लड़के वालों की अपेक्षाएं देखिए- लड़की कितनी गोरी है? कितनी पढ़ी-लिखी है? उसकी सैलरी कितनी है? नौकरी भी करे और घर भी संभाले। सोशल मीडिया पर कितनी सक्रिय है? शादी के बाद संयुक्त परिवार में रहेगी या अलग रहने की इच्छा रखेगी? लड़की वालों की अपेक्षाएं भी कम नहीं हैं। लड़के का अपना मकान होना चाहिए, वह भी कितने बीएचके का? कार कौन सी है? सालाना पैकेज कितना है? विदेश जाने की संभावना है या नहीं? कितनी जमीन-जायदाद है? माता-पिता साथ रहेंगे या अलग? हमने रिश्तों को भी ऑनलाइन शॉपिंग जैसा बना दिया है। हाइट इतनी हो, रंग ऐसा हो, वेतन इतना हो, घर ऐसा हो और लोकेशन वैसी हो। जब शर्तों की सूची इतनी लंबी होगी तो अच्छे रिश्तों का दायरा अपने आप छोटा होता जाएगा।

## 'इससे भी अच्छा मिल जाएगा' की मानसिकता

रिश्तों के मामले में सबसे बड़ी समस्या है हर बार पहले से बेहतर विकल्प तलाशने की मानसिकता। एक अच्छा रिश्ता आया। लड़का समझदार है, जिम्मेदार है, परिवार अच्छा है। लड़की शिक्षित है, आत्मनिर्भर है और स्वभाव से अच्छी है। लेकिन मन में एक विचार आता है- थोड़ा और देख लेते हैं, इससे भी अच्छा मिल सकता है। पहला रिश्ता ठुकरा दिया, दूसरा आया तो उसमें भी कोई कमी निकाल दी। इसी इंतजार में साल-दर-साल निकल जाते हैं। बाद में जब एहसास होता है कि अच्छे रिश्ते आसानी से नहीं मिलते, तब तक परिस्थितियां बदल चुकी होती हैं। यह बात समझनी होगी कि जिंदगी कोई सरकारी टेंडर नहीं है, जहां सबसे ऊंची बोली लगाने वाले का इंतजार किया जाए। विवाह एक ऐसा निर्णय है, जिसमें समझदारी, आपसी सम्मान और व्यावहारिकता सबसे ज्यादा मायने रखते हैं।

## पैसा जरूरी है, लेकिन रिश्तों से बड़ा नहीं

हर माता-पिता चाहते हैं कि उनकी बेटी सुखी रहे और बेटे को भी एक अच्छा जीवनसाथी मिले। इसमें कुछ गलत नहीं है। लेकिन सुख की परिभाषा केवल बड़े मकान, महंगी कार और मोटे वेतन तक सीमित कर देना गलत है। एक बड़ा घर है, लेकिन उसमें रोज झगड़े होते हैं, एक-दूसरे के लिए सम्मान नहीं है, तो उस घर की भव्यता किस काम की? दूसरी ओर छोटा घर है, सीमित आमदनी है, लेकिन पति-पत्नी में प्रेम, विश्वास और सम्मान है तो वही घर खुशियों से भरा हो सकता है। आज की लड़कियां पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बन रही हैं। उन्हें केवल आर्थिक सुरक्षा देने वाला पति नहीं, बल्कि उनका सम्मान करने वाला साथी चाहिए। इसी तरह लड़कों को भी घर संभालने वाली नौकरानी नहीं, बल्कि बराबरी से जीवन जीने वाली समझदार जीवनसंगिनी चाहिए। घर बसाना किसी एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि दो लोगों की साझी यात्रा है।

## उम्र बढ़ती है, अपेक्षाएं भी बदलती हैं

यह भी एक सच्चाई है कि उम्र के साथ जीवन की प्राथमिकताएं और जिम्मेदारियां बदलती हैं। 25 वर्ष की उम्र में जो निर्णय आसान लगता है, वही निर्णय 32 या 35 वर्ष की उम्र में अधिक विचार और समझदारी मांग सकता है। करियर, आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत पसंद महत्वपूर्ण हैं, लेकिन परिवार और व्यक्तिगत जीवन को लेकर भी समय रहते गंभीरता से सोचना जरूरी है। हालांकि 30 या 35 वर्ष की उम्र विवाह के लिए कोई अंतिम सीमा नहीं है। हर व्यक्ति की परिस्थितियां अलग होती हैं। देर से शादी करना कोई अपराध या असफलता नहीं है। लेकिन केवल काल्पनिक परफेक्ट रिश्ते की तलाश में अच्छे और व्यावहारिक रिश्तों को लगातार ठुकराते रहना भी समझदारी नहीं है। अपने बच्चों के लिए अच्छा रिश्ता तलाशिए, लेकिन उन्हें इतनी कसौटियों पर मत परखिए कि वे इंसान नहीं, बाजार में बिकने वाली वस्तु लगने लगें। लड़के में जिम्मेदारी, ईमानदारी और सम्मान का भाव देखिए। लड़की में समझदारी, आत्मनिर्भरता और संवेदनशीलता देखिए। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि दोनों एक-दूसरे की सोच, इच्छाओं और जीवन के लक्ष्यों का सम्मान करते हों। सिर्फ माता-पिता की पसंद से शादी नहीं होनी चाहिए। लड़के और लड़की की सहमति, सहजता और आपसी समझ सबसे जरूरी है। विवाह कोई ऐसा समझौता नहीं, जिसमें एक पक्ष अपनी इच्छाएं छोड़कर दूसरे की अपेक्षाओं के अनुसार जीवन बिताए।

## अंत में एक बात...

परफेक्ट इंसान कोई नहीं होता। लेकिन सही इंसान वह हो सकता है, जिसके साथ आप अपनी कमियों के बावजूद बेहतर इंसान बनने की कोशिश कर सकें। रिश्ते जोड़िए, सौदे मत कीजिए। पैकेज और प्रॉपर्टी के साथ स्वभाव और संस्कार भी देखिए। अपनी अपेक्षाएं रखिए, लेकिन दूसरों की वास्तविकताओं को समझने का प्रयास भी कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि हम अपने बच्चों के लिए परफेक्ट जीवनसाथी तलाशते-तलाशते उनके जीवन के उन खूबसूरत अवसरों को ही पीछे छोड़ दें, जिनमें वे किसी के साथ मिलकर अपना संसार बसा सकते थे। क्योंकि अंततः जिंदगी की सबसे बड़ी उपलब्धि बैंक बैलेंस, बड़ी गाड़ी या आलीशान मकान नहीं, बल्कि ऐसा रिश्ता है जहां इंसान को समझा जाए, सम्मान मिले और घर लौटने पर अपनापन महसूस हो।

**सोचिएगा जरूर!**

# सेवा सदन के शिलान्यास के लिए आचार्य पुलक सागर महाराज को सोनागिर आने का आमंत्रण

## आचार्यश्री ने सोनागिर आगमन की दी सहमति, गोलालारे समाज सेवा सदन एवं मंदिर निर्माण को लेकर हुई चर्चा

**मुरैना/सोनागिर (मनोज जैन नायक)**



भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलालारे समाज समिति सोनागिर न्यास के पदाधिकारियों ने राजस्थान के भीलवाड़ा में विराजमान आचार्यश्री पुलक सागर महाराज के दर्शन कर श्रीफल भेंट किया तथा सिद्धक्षेत्र सोनागिर में प्रस्तावित गोलालारे समाज सेवा सदन एवं मंदिरजी के भूमि पूजन और शिलान्यास समारोह में पधारने का आमंत्रण दिया। इस अवसर पर पदाधिकारियों ने आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। सोनल जैन द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, इस अवसर पर सोनागिर न्यास के अध्यक्ष अनिल जैन ने आचार्यश्री के समक्ष सिद्धक्षेत्र सोनागिर में गोलालारे समाज सेवा सदन एवं मंदिरजी के निर्माण की प्रस्तावित योजना की जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने निर्माण कार्य के भूमि पूजन एवं शिलान्यास समारोह में सान्निध्य प्रदान करने का निवेदन करते हुए आचार्यश्री को सोनागिर पधारने का आमंत्रण दिया। आचार्यश्री पुलक सागर महाराज ने न्यास की प्रस्तावित परियोजना के संबंध में विस्तार से जानकारी प्राप्त की तथा आवश्यक मार्गदर्शन एवं सुझाव प्रदान किए। उन्होंने सोनागिर आगमन के आमंत्रण को स्वीकार करते हुए वहां पधारने की सहमति प्रदान की। आचार्यश्री की सहमति मिलने पर न्यास के पदाधिकारियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके प्रति आभार एवं कृतज्ञता प्रकट की। इस अवसर पर केसी जैन भीलवाड़ा, महेश जैन, सुनील जैन, सुरेंद्र वैक्सीन, प्रकाश जैन बिजली वाले, चक्रेश जैन सहित समाज के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

# मेवाड़ी धरती की धड़कन बनेगा संगीत : उदयपुर में पहली बार रिकी केज की "द अर्थ सिम्फनी"






## डीपीएस ग्राउंड में रविवार शाम सजेगा सृजन सम्मान समारोह, सात प्रतिष्ठित हस्तियों को मिलेंगे कला प्रेरक अवॉर्ड

**उदयपुर. शाबाश इंडिया**

झीलों के शांत जल और अरावली की गोद में बसी उदयपुर की सांस्कृतिक चेतना रविवार को एक नई ऊंचाई छूने जा रही है। 15 नवंबर की शाम दिल्ली पब्लिक स्कूल ग्राउंड में सुरों, संवेदनाओं, सम्मान और सृजनशीलता का ऐसा आयोजन होगा, जिसमें पहली बार तीन बार के ग्रैमी विजेता तथा पद्मश्री सम्मानित अंतरराष्ट्रीय संगीतकार रिकी केज अपनी अद्वितीय प्रस्तुति से शहरवासियों को संगीत की वैश्विक यात्रा पर ले जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक एवं संगीत संस्था ''सृजन द स्पार्क'' की ओर से बिजय कुमार सुराणा फाउंडेशन और हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड के सहयोग से आयोजित यह भव्य समारोह शाम 6 बजे शुरू होगा। कार्यक्रम केवल मनोरंजन की संध्या नहीं, बल्कि कला के प्रति समर्पण, पर्यावरण के प्रति संवेदना और प्रतिभाओं के सम्मान का उत्सव बनेगा। शुक्रवार को प्रेसवार्ता में हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड के सीईओ अमरेन्दु प्रकाश ने बताया कि आयोजन का सर्वाधिक आकर्षण रिकी केज की संगीतमय प्रस्तुति 'द अर्थ सिम्फनी' होगी। यह प्रस्तुति पृथ्वी, प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के संदेश को संगीत की भाषा में अभिव्यक्त करेगी। अपनी विश्वप्रशंसित रचनाओं के माध्यम से रिकी केज दर्शकों को यह अनुभूति कराएंगे कि संगीत केवल सुनने की चीज नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच संवाद का सबसे संवेदनशील माध्यम भी है। इस अवसर पर उन्हें संगीत और कला के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय योगदान के लिए 'हिंदुस्तान जिंक सृजन लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड-2026' प्रदान किया जाएगा। समारोह में देश के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली सात विशिष्ट हस्तियों को 'सृजन कला प्रेरक अवॉर्ड-2026' से सम्मानित किया जाएगा। सृजन द स्पार्क एपेक्स के अध्यक्ष राजेश खमेसरा ने बताया कि सेलो ग्रुप के चेयरमैन प्रदीप राठौड़ को सृजन बिजनेस आइकन अवॉर्ड, सुप्रसिद्ध वायलिन वादक दीपक पंडित को सृजन वी.डी. पलुस्कर अवॉर्ड, प्रख्यात शायर एवं गायक डॉ. हरिओम, आईएएस को सृजन अमीर खुसरो अवॉर्ड तथा शिक्षाविद एवं कला संरक्षक सुधीर तिवारी को सृजन ओंकारनाथ ठाकुर अवॉर्ड प्रदान किया जाएगा। पूर्वाध्यक्ष श्याम एस. सिंघवी ने बताया कि जेईसीआरसी यूनिवर्सिटी के वाइस चेयरमैन अमित अग्रवाल को सृजन नंदलाल बोस अवॉर्ड, इंदिरा आईवीएफ के प्रमोटर एवं फिल्म निमार्ता डॉ. अजय मुर्डिया को सृजन खेमचंद प्रकाश अवॉर्ड तथा प्रसिद्ध गायक एवं दंत चिकित्सक डॉ. समीर शर्मा को सृजन मास्टर मदन अवॉर्ड से अलंकृत किया जाएगा। संस्था संरक्षक प्रसन्न खमेसरा ने कहा कि 'सृजन द स्पार्क' भारतीय शास्त्रीय संगीत, गजल, वाद्य संगीत, साहित्य और ललित कलाओं को नई पीढ़ी से जोड़ने के लिए निरंतर सक्रिय है। संस्था से शैलेश लोढ़ा, पद्मश्री अनूप जलोटा, उस्ताद अहमद हुसैन-मोहम्मद हुसैन, पद्मश्री आनंदन शिवमणि और पं. रोनू मजूमदार जैसी विभूतियां जुड़ी हैं। उदयपुर में कला एवं संगीत अकादमी स्थापित करने की योजना भी संस्था की दूरदर्शी पहल का हिस्सा है। इससे स्थानीय प्रतिभाओं को व्यवस्थित प्रशिक्षण और व्यापक मंच मिलने की उम्मीद है। अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा ने बताया कि आयोजन में प्रवेश और पंजीकरण पूर्णतः निःशुल्क रहेगा। इसके लिए शहर के निर्धारित केंद्रों से प्रवेश पास उपलब्ध कराए जा रहे हैं। रविवार की यह शाम उदयपुर के सांस्कृतिक इतिहास में सुरों से लिखा जाने वाला एक यादगार अध्याय बनने जा रही है।

रिपोर्टः राकेश शर्मा 'राजदीप'

# दंत जांच एवं परामर्श शिविर में 42 मरीजों ने कराई दांतों की जांच

## दंत जांच एवं परामर्श शिविर में 42 मरीजों ने कराई दांतों की जांच

**जयपुर. शाबाश इंडिया**

महावीर नगर स्थित श्री महावीर साधना स्वास्थ्य केंद्र में दंत जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। डेंटल क्लीनिक के शुभारंभ के अवसर पर आयोजित इस शिविर में करीब 42 मरीजों ने अपने दांतों की जांच कराई और दांतों की सुरक्षा एवं देखभाल के संबंध में चिकित्सकों से परामर्श लिया। यह स्वास्थ्य केंद्र श्री महावीर साधना संस्थान के अधीन संचालित है। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष अनिल कुमार जैन, संस्थान के मुख्य समन्वयक जस्टिस नरेंद्र कुमार जैन और सुरेंद्र कुमार जैन भी उपस्थित रहे। श्री महावीर साधना स्वास्थ्य केंद्र के मंत्री सुरेश काला एवं प्रभारी नीरज गंगवाल ने बताया कि क्लीनिक में वरिष्ठ दंत चिकित्सक डॉ. प्रमिला महला जैन ने मरीजों के दांतों की जांच की। साथ ही उन्हें दांतों की नियमित देखभाल, स्वच्छता और सुरक्षा के बारे में आवश्यक जानकारी एवं परामर्श दिया। उन्होंने बताया कि डॉ. प्रमिला इम्प्लांट, ब्रेसेस एवं एलाइनर्स की विशेषज्ञ हैं। क्लीनिक में रविवार से शुक्रवार तक दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक दंत चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध रहेंगी। शनिवार को अवकाश रहेगा। उन्होंने बताया कि इस सुविधा के शुरू होने से महावीर नगर एवं आसपास के क्षेत्रों के नागरिकों को आधुनिक दंत चिकित्सा सेवाएं सुलभ हो सकेंगी।



# पांचालेश्वर में भक्तिभाव के साथ मनाया गया दीपोत्सव

## पाचोड बाल मंडल सहित पुण्यशाली परिवारों को मिला आरती का सौभाग्य



छत्रपति संभाजीनगर. शाबाश इंडिया

श्री 1008 नंदीश्वर दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, पांचालेश्वर में दीपोत्सव हर्षोल्लास एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर परिसर में दीप प्रज्वलन और विभिन्न धार्मिक आरतियों के आयोजन से वातावरण भक्तिमय हो गया। आरती का सौभाग्य प्राप्त करने वाले पुण्यशाली परिवारों एवं पाचोड बाल मंडल का श्रद्धालुओं ने अनुमोदना करते हुए अभिनंदन किया। दीपोत्सव के अवसर पर सर्वप्रथम श्री नंदीश्वर दीप की आरती करने का सौभाग्य छत्रपति संभाजीनगर निवासी रमेशकुमारजी, रितेशकुमारजी एवं सौरभकुमारजी बड़जात्या परिवार को प्राप्त हुआ। द्वितीय आरती श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान की हुई, जिसका सौभाग्य पाचोड बाल मंडल को मिला। तृतीय आरती श्री 1008 मुनिसुव्रत भगवान की करने का सौभाग्य जयकुमारजी, सुयोगजी, अक्षयजी एवं दिव्यम बाकलीवाल परिवार, पाचोड को प्राप्त हुआ। चतुर्थ आरती श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान की करने का सौभाग्य अजितचंदजी, राजेंद्रकुमारजी, संजयजी, सम्यक एवं तनिष सेठी परिवार, पाचोड को मिला। वहीं, पंचम आरती श्री क्षेत्रपाल बाबा की करने का सौभाग्य राजूजी एवं हर्षल काला परिवार, पाचोड-गेवराई को प्राप्त हुआ। इस धार्मिक आयोजन के माध्यम से जैन परंपराओं के संरक्षण के साथ नई पीढ़ी में जैन संस्कारों और धर्म के प्रति रुचि जागृत करने का संदेश दिया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने भावना व्यक्त की कि दीपोत्सव केवल दीपों का उत्सव नहीं, बल्कि आत्मज्ञान, सदाचार और जिनशासन की प्रभावना का संकल्प भी है। सभी आरतियों के पुण्यशाली मानकरी परिवारों एवं पाचोड बाल मंडल का उपस्थित श्रद्धालुओं ने अभिनंदन और अनुमोदना की। सभी ने भगवान से प्रार्थना की कि उनके आशीर्वाद से प्रत्येक परिवार के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि एवं धर्मवृद्धि हो तथा पांचालेश्वर अतिशय क्षेत्र की धर्मप्रभावना निरंतर बढ़ती रहे। दीपावली महोत्सव को सफल बनाने में क्षेत्र के ट्रस्ट एवं कार्यकारिणी मंडल का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर अध्यक्ष गौतमचंद काला, कोषाध्यक्ष संजय सेठी, उपाध्यक्ष वृषभ गंगवाल, उपाध्यक्ष एडवोकेट सुहास चुड़ीवाल, सचिव भाऊसाहेब बाकलीवाल, ट्रस्टी कैलाश खोबरे, विजय पापड़ीवाल, हीरालाल धोंडलकर, अशोक कासलीवाल, विलास पहाड़े, राजेंद्र काला, भगवानदास काला, संतोष अजमेरा, प्रकाश सेठी, संदीप कासलीवाल, सूरज अन्नदाते, सुभाष बड़जात्या, अक्षय बड़जात्या, केतन बड़जात्या, आशीष पांडे, राजू काला, दीपक खोबरे एवं दयाचंदजी पंडितजी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। भक्त परिवार की ओर से पदमभाऊ अजमेरा, संतोष अजमेरा, गौरव कासलीवाल, संजय रणदिवे, महावीर गंगवाल, सुभाष रणदिवे, पंकज काला, अभिजीत काला, सुनील पाटणी, वर्धमान काला, विपुल काला, ब्रह्मेश काला, अंशुल काला, मदना काला, सौ. शोभा सेठी एवं विनोद अजमेरा सहित अनेक श्रद्धालुओं ने सहभागिता निभाई। इस अवसर पर छत्रपति संभाजीनगर, बीड, गेवराई, पाचोड, पैठण, विवाहमांडवा, राक्षसभुवन एवं उमापुर सहित विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। दीपमालिका कार्यक्रम को सफल बनाने में जैन क्रांति मंच का विशेष सहयोग रहा। उक्त जानकारी नरेंद्र अजमेरा एवं पियुष कासलीवाल ने दी।

# आचार्य विनम्रसागरजी महाराज के सान्निध्य में 15 नवंबर को होगा भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह

## राजाबाजार से दोपहर 12:30 बजे निकलेगी शोभायात्रा, हिराकाका प्रांगण में होगा धार्मिक आयोजन



**छत्रपति संभाजीनगर. शाबाश इंडिया।** परम पूज्य भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री 108 विनम्रसागरजी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में उनके 35वें विनम्र वर्षायोग 2026 के समापन के पश्चात रविवार, 15 नवंबर को भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह का आयोजन किया जाएगा। खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत एवं विनम्र चातुर्मास समिति, राजाबाजार के तत्वावधान में यह धार्मिक आयोजन हिराकाका प्रांगण में संपन्न होगा। समारोह के तहत दोपहर 12:30 बजे श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, राजाबाजार से भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। शोभायात्रा नगर के विभिन्न मार्गों से होते हुए हिराकाका प्रांगण पहुंचेगी। इसके पश्चात दोपहर 1 बजे आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में पिच्छिका परिवर्तन एवं कृतज्ञता समारोह आयोजित होगा। जैन मुनियों के जीवन में पिच्छिका का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह केवल एक साधन नहीं, बल्कि संयम, दया, करुणा और अहिंसा का प्रतीक है। विहार करते समय अथवा आसन ग्रहण करते समय सूक्ष्म जीवों को किसी प्रकार की हानि न पहुंचे, इसी करुणाभावना के साथ मुनिराज पिच्छिका का उपयोग करते हैं। पिच्छिका परिवर्तन जैन साधना में त्याग, संयम और आत्मशुद्धि का महत्वपूर्ण धार्मिक संस्कार माना जाता है। समाधिस्थ गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज का साहित्यिक योगदान भी उल्लेखनीय है। उनकी लेखनी से ''जीवन है पानी की बूंद'' जैसे लोकप्रिय भजन सहित लगभग 9500 छंदों की रचना हुई है। इस मंगलमय धार्मिक समारोह के पश्चात विनम्र भक्त परिवार की ओर से उपस्थित श्रद्धालुओं के लिए महाप्रसाद की व्यवस्था की गई है।



# किशनगढ़ में 15 नवंबर को होगा भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह



## आचार्य श्री 108 विहर्षसागरजी महाराज ससंघ के चातुर्मास समापन पर होगा आयोजन, जनमंगल कलश का लकी ड्रॉ रहेगा मुख्य आकर्षण

**मदनगंज-किशनगढ़.शाबाश इंडिया**

धर्मनगरी किशनगढ़ में परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 विहर्षसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में संपन्न हुए मंगलमय चातुर्मास 2026 के समापन के उपलक्ष्य में रविवार, 15 नवंबर को भव्य पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित किया जाएगा। समारोह श्रद्धा, भक्ति और धार्मिक उल्लास के साथ मनाया जाएगा। चातुर्मास के दौरान किशनगढ़ की पावन धरा पर धर्म, आराधना, तप, त्याग और संस्कारों की अविरल धारा प्रवाहित हुई। आचार्यश्री के मंगलमय सान्निध्य में श्रद्धालुओं को धर्म के प्रति समर्पण और आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त हुई। चातुर्मास की मंगलमय संपन्नता के पश्चात आयोजित होने वाला पिच्छिका परिवर्तन समारोह जैन धर्म की अहिंसा, संयम और त्याग की परंपरा का महत्वपूर्ण प्रतीक है। समारोह रविवार, 15 नवंबर को दोपहर 1 बजे आर.के. कम्युनिटी सेंटर, किशनगढ़ में आयोजित होगा। इस अवसर पर आचार्य श्री विहर्षसागरजी महाराज ससंघ का मंगलमय सान्निध्य प्राप्त होगा तथा विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम संपन्न होंगे।

### जनमंगल कलश का निकलेगा लकी ड्रॉ

समारोह का विशेष आकर्षण जनमंगल कलश का लकी ड्रॉ रहेगा। चातुर्मास के दौरान श्रद्धालु परिवारों की ओर से जनमंगल कलश स्थापित किए गए थे। समारोह के दौरान इन कलशों का लकी ड्रॉ निकाला जाएगा। इसमें चयनित एक भाग्यशाली एवं पुण्यशाली परिवार को जनमंगल कलश प्रदान किया जाएगा। इस आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह और उत्सुकता बनी हुई है। आचार्य श्री 108 विहर्षसागर चातुर्मास समिति के तत्वावधान में आयोजित समारोह के लिए श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन पंचायत एवं सकल दिगंबर जैन समाज, किशनगढ़ ने समस्त समाजबंधुओं से सपरिवार उपस्थित होकर इस पावन अवसर पर धर्मलाभ लेने और पुण्यार्जन करने का आग्रह किया है।

# जनजातीय हाट में संस्कृति और आत्मनिर्भरता की दिखी झलक




**नसीराबाद (ब्यूरो चीफ रोहित जैन)।** भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में 1 से 15 नवंबर 2026 तक मनाए जा रहे जनजातीय गौरव पखवाड़े के अंतर्गत शुक्रवार को पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, नसीराबाद में जनजातीय हाट बाजार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य महान जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष और बलिदान को स्मरण करने के साथ विद्यार्थियों को भारत की समृद्ध जनजातीय संस्कृति, परंपराओं, कला और जीवनशैली से परिचित कराना था। इस अवसर पर कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न स्टॉल लगाए। इनमें जनजातीय कलाकृतियों, पारंपरिक आभूषणों, खिलौनों, खेलकूद सामग्री, मिट्टी एवं बांस से निर्मित वस्तुओं और पारंपरिक खान-पान का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा जनजातीय जीवनशैली पर आधारित चित्रकला एवं पेंटिंग भी आकर्षण का केंद्र रहीं। विद्यार्थियों ने लोकनृत्य और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से जनजातीय विरासत की सुंदर झलक प्रस्तुत की।

### बिना आग के पकवान बनाकर सीखे उद्यमिता के गुर

कार्यक्रम का विशेष आकर्षण कौशल विकास के अंतर्गत आयोजित 'कुकिंग विदाउट फायर' गतिविधि रही। इसमें विद्यार्थियों ने बिना आग का उपयोग किए विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ तैयार किए और उनके स्टॉल लगाकर बिक्री भी की। इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों ने खाद्य सामग्री की लागत निर्धारित करना, उचित मूल्य पर बिक्री करना, लाभ-हानि की गणना, ग्राहकों से संवाद, स्वच्छता, टीमवर्क और बाजार प्रबंधन जैसे व्यावहारिक कौशल सीखे। इस पहल से विद्यार्थियों को उद्यमिता, स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता का प्रत्यक्ष अनुभव मिला। उन्होंने समझा कि रचनात्मकता, मेहनत और कौशल के माध्यम से छोटे स्तर पर भी व्यवसाय शुरू कर आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

### प्राचार्य ने की आयोजन की सराहना

विद्यालय के प्राचार्य आर.सी. मीणा ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की गतिविधियां विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान से आगे बढ़कर वास्तविक जीवन के अनुभव प्रदान करती हैं। इनसे विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, उद्यमशीलता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों की प्रशंसा की।

# आत्मकल्याण के लिए जीवन के हर क्षण में करें पुण्य का संचय: मुनि श्रमण सागरजी महाराज

## साडा कॉलोनी, राघौगढ़ में मुनि संघ के सान्निध्य में हुई धर्मप्रभावना, श्रमण धारा प्रवचन माला में बताए पुण्य संचय के चार उपाय



**राघौगढ़. शाबाश इंडिया।** दिगंबर जैन आचार्य विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, प्रवचन वाचस्पति, ओजस्वी वक्ता एवं बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागरजी महाराज ने शुक्रवार को श्री बासुपूज्य दिगंबर जैन मंदिर, साडा कॉलोनी के सभागार में आयोजित श्रमण धारा प्रवचन माला के अंतर्गत धर्मसभा को संबोधित किया। उन्होंने ''जीवन में पुण्य का संचय कैसे करें'' विषय पर मंगल प्रवचन देते हुए कहा कि जीवन का सारा खेल पुण्य और पाप का है। आत्मकल्याण एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए मनुष्य को जीवन के हर क्षण में पुण्य संचय करना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है। इस जीवन को धर्म-साधना में लगाकर आत्मकल्याण और मोक्ष फल प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए कदम-कदम पर पुण्य संचय की आवश्यकता है। उन्होंने पुण्य प्राप्ति के चार प्रमुख उपायों का विस्तार से वर्णन किया।

### भगवान की निष्काम भक्ति और पूजन

पुण्य संचय का पहला उपाय बताते हुए मुनिश्री ने भगवान की निष्काम पूजन-भक्ति पर जोर दिया। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जैन दर्शन के अनुसार सौधर्म इंद्र भी मनुष्य जन्म धारण कर केवलज्ञान प्राप्त करने और मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए अनेक प्रयास करता है। सौधर्म इंद्र वर्ष में तीन बार परिवार सहित अष्टान्हिका महापर्व के दौरान नंदीश्वर द्वीप जाकर भगवान की पूजन-अभिषेक करता है। उसे ज्ञात है कि इंद्र पद से मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं, बल्कि मनुष्य जन्म धारण कर ही मोक्ष मार्ग प्राप्त किया जा सकता है।

### सुपात्र को दान और व्रत का पालन

दूसरा उपाय बताते हुए मुनिश्री ने कहा कि सुपात्र को दान देने से अपार पुण्य का संचय होता है। दिगंबर मुनिराज को आहार में एक ग्रास देने का पुण्य हजार भूखों को भोजन कराने के बराबर बताया गया है। तीसरे उपाय के रूप में उन्होंने व्रत और नियमों के पालन का महत्व समझाया। उन्होंने कहा कि जीवन में जो नियम लिया जाए, उस पर दृढ़ रहकर उसका पालन करना चाहिए। इससे अपार पुण्य का संचय होता है। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि भगवान महावीर का जीव पूर्व भव में भील था। उस समय मुनिराज से उसने एक कौवे का मांस न खाने का नियम लिया था। इस नियम के पालन का फल उसे अगले भव में भगवान महावीर के रूप में तीर्थंकर पद प्राप्त होने के रूप में मिला। इसी प्रकार यमपाल चांडाल का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उसने चतुर्दशी के दिन फांसी न लगाने का नियम लिया था।

# पंचायत चुनाव: आज और 16 नवंबर को मतदान क्षेत्रों में सार्वजनिक अवकाश



जयपुर. शाबाश इंडिया

पंचायतीराज संस्थाओं के आम चुनाव-2026 के तहत जयपुर जिले में जिला परिषद, पंचायत समिति सदस्य तथा पंच-सरपंच पदों के निर्वाचन के लिए निर्धारित मतदान दिवसों पर संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में सार्वजनिक अवकाश रहेगा। जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) संदेश नायक ने बताया कि मतदान में अधिकाधिक मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सरकारी कार्यालयों के साथ औद्योगिक एवं वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों में कार्यरत कर्मचारियों को भी सवैतनिक अवकाश देना अनिवार्य किया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि पंचायतीराज आम चुनाव के चतुर्थ चरण के अंतर्गत जयपुर जिले की चार पंचायत समितियों बस्सी, तूंगा, जमवारामगढ़ और आंधी में जिला परिषद एवं पंचायत समिति सदस्य पदों के लिए शनिवार, 14 नवंबर को मतदान होगा। वहीं पंच और सरपंच पदों के लिए सोमवार, 16 नवंबर को मतदान कराया जाएगा। इन दोनों तिथियों पर संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में सार्वजनिक अवकाश प्रभावी रहेगा। उन्होंने बताया कि मतदान दिवस पर संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में स्थित सभी सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालयों में सार्वजनिक अवकाश रहेगा।






# जिनदीक्षा से पूर्व दीक्षार्थियों ने की गणधर वलय विधान की आराधना

## 15 नवंबर को आचार्य विमर्शसागरजी महाराज प्रदान करेंगे चार मुमुक्षुओं को भगवती जिनदीक्षा, 54वें विमर्श उत्सव की तैयारियां पूरी

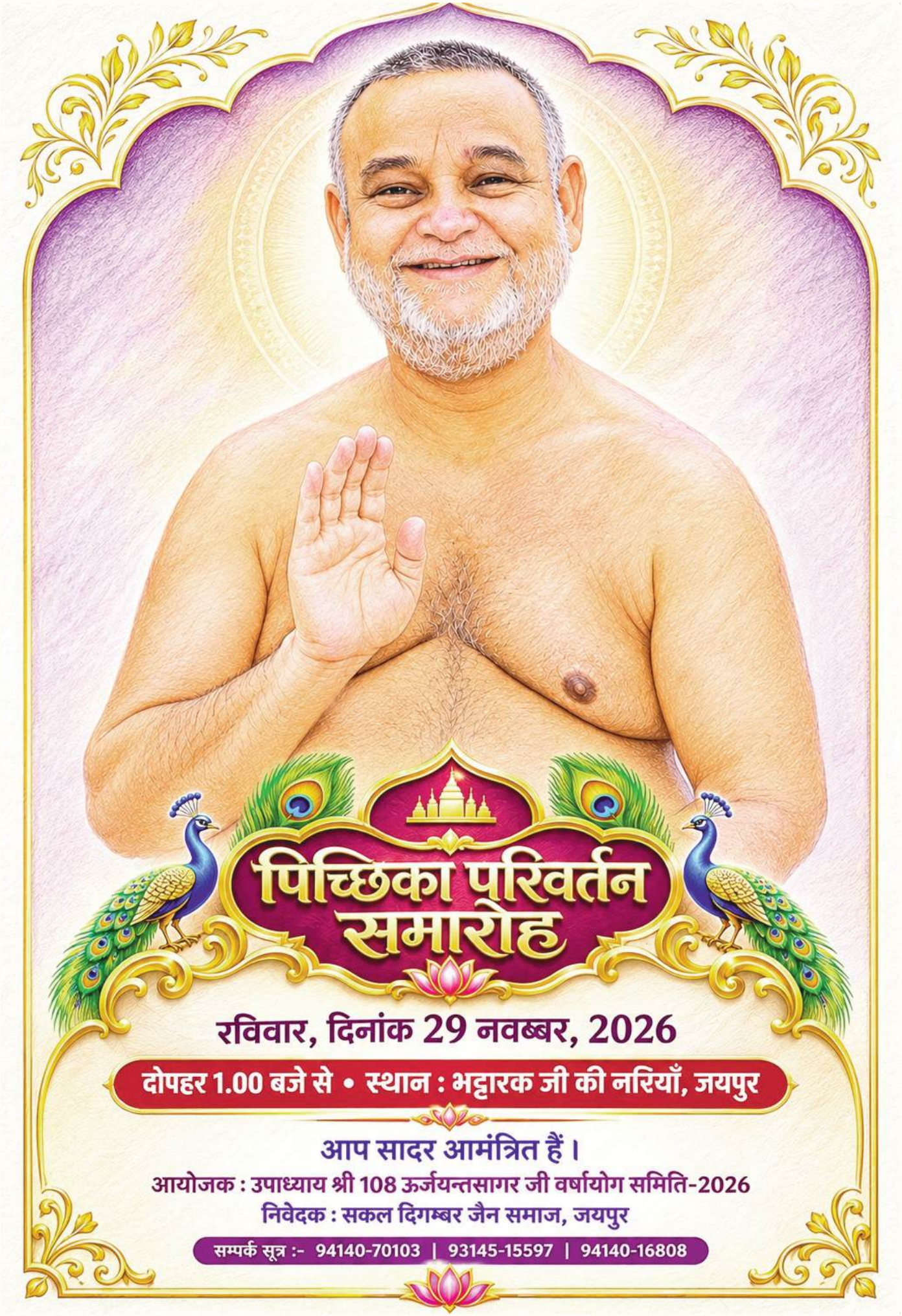





**देहरा तिजारा.शाबाश इंडिया।** अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागरजी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में आयोजित भगवती जिनदीक्षा महोत्सव के तहत शुक्रवार, 13 नवंबर को दीक्षार्थियों एवं श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक श्री गणधर वलय विधान की आराधना की। आगामी 15 नवंबर को चार मुमुक्षु आत्माएं आचार्यश्री के पावन करकमलों से भगवती जिनदीक्षा ग्रहण कर संयम के मार्ग पर अग्रसर होंगी। मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन एवं प्रचार मंत्री उमंग जैन ने बताया कि विधान में दीक्षार्थियों के परिजनों और श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विधान के माध्यम से दीक्षार्थियों के भावी संयममय जीवन की मंगलकामना की गई। पूरा वातावरण जिनेंद्र भक्ति, मंत्रोच्चार और धार्मिक उल्लास से भक्तिमय हो उठा। 15 नवंबर को आचार्य श्री विमर्शसागरजी महाराज के सान्निध्य में चार मुमुक्षु दीक्षा ग्रहण कर अपना जीवन आत्मकल्याण के लिए समर्पित करेंगे। दीक्षार्थियों में क्षुल्लक विमर्शसागरजी, ब्रह्मचारिणी सुनीता दीदी (सहारनपुर) और ब्रह्मचारिणी बबली दीदी (पटना) शामिल हैं।

### 54वां विमर्श उत्सव भी मनेगा

इसी दिन आचार्य श्री विमर्शसागरजी महामुनिराज का 54वां अवतरण एवं जन्म जयंती महोत्सव 'विमर्श उत्सव' श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। इसके उपलक्ष्य में 13 नवंबर की संध्या को आर्यिकारत्न विमर्शिताश्री माताजी के निर्देशन में ज्ञान, भक्ति, पूजा एवं संस्कारों से जुड़ी ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें देश-विदेश के हजारों श्रद्धालुओं ने सहभागिता की। धर्मसभा में आचार्यश्री ने कहा कि संसार में सुख-दुख आते-जाते रहते हैं। दुखों से स्थायी मुक्ति का मार्ग आत्मज्ञान और संयम में निहित है। संयम धारण करके ही जीव संसार के दुखों से मुक्त होकर शाश्वत सुख की दिशा में आगे बढ़ सकता है। आयोजन में मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन, महामंत्री नरेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष शिंभू जैन, प्रचार मंत्री उमंग जैन, चातुर्मास अध्यक्ष सुरेश जैन (पटेल), अमन जैन, शैलू जैन, वरुण जैन, रवि जैन, आदिश्वर जैन, सचिन जैन, नीरज जैन, विजय जैन, सुभाष जैन सर्राफ एवं राकेश जैन सहित अनेक श्रद्धालुओं का सहयोग रहा।


पिच्छिका परिवर्तन समारोह
रविवार, दिनांक 29 नवम्बर, 2026
दोपहर 1.00 बजे से • स्थान : भट्टारक जी की नरियाँ, जयपुर
आप सादर आमंत्रित हैं।
आयोजक : उपाध्याय श्री 108 ऊर्जयन्तसागर जी वर्षायोग समिति-2026
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज, जयपुर
सम्पर्क सूत्र :- 94140-70103 | 93145-15597 | 94140-16808



# जयपुर में प्रशिक्षण कार्यक्रम में मर्म चिकित्सा पर विशेष सत्र, डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने दी जानकारी




**जयपुर.शाबाश इंडिया**

राजस्थान सरकार के आयुर्वेद विभाग एवं राष्ट्रीय आयुष मिशन, राजस्थान के तत्वावधान में आरटीडीसी होटल गणगौर में दो दिवसीय ओरिएंटेशन एवं कैपेसिटी बिल्डिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में आयुष चिकित्सकों एवं कर्मियों के ज्ञानवर्धन और कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसी क्रम में मर्म चिकित्सा पर विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसमें मर्म चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने प्रतिभागियों को इस चिकित्सा पद्धति के सिद्धांतों एवं महत्व की जानकारी दी। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नितिन गोयल के निर्देशन में आयोजित सत्र में डॉ. त्रिवेदी ने आयुर्वेद ग्रंथों एवं संहिताओं में वर्णित मर्म चिकित्सा के महत्व को समझाया। उन्होंने मर्म बिंदुओं की पहचान, वर्गीकरण, शारीरिक संरचना, चिकित्सीय उपयोग, सावधानियों एवं सुरक्षित तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. त्रिवेदी ने व्यावहारिक अभ्यास भी करवाए। आयोजकों के अनुसार, इस दौरान कुछ रोगियों पर किए गए अभ्यास से उन्हें तत्काल लाभ मिला। इससे प्रतिभागी चिकित्सकों ने मर्म चिकित्सा की व्यावहारिक उपयोगिता को समझा। उल्लेखनीय है कि डॉ. पीयूष त्रिवेदी पिछले 35 वर्षों से मर्म चिकित्सा के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं उपचार का कार्य कर रहे हैं। प्रशिक्षण सत्र में क्लिनिकल प्रैक्टिस के दौरान मर्म चिकित्सा के समावेश के साथ रोगी सुरक्षा और आवश्यक सावधानियों पर भी जोर दिया गया।

# जैन प्रोफेशनल्स के संगठनात्मक आंदोलन के जनक एवं प्रेरणास्रोत - आचार्य सराकोद्धारक ज्ञानसागर जी महाराज (छाणी)

**15 नवम्बर : सप्तम समाधि स्मृति दिवस पर विशेष आलेख**

भारतीय जैन संत परंपरा में कुछ आचार्य ऐसे हुए हैं, जिन्होंने आत्मकल्याण की साधना के साथ समाज के सर्वांगीण विकास को भी अपनी साधना का महत्वपूर्ण अंग बनाया। सराकोद्धारक आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज (छाणी) ऐसे ही दूरदर्शी संत थे। उनका चिंतन केवल धार्मिक प्रवचनों और आध्यात्मिक जागरण तक सीमित नहीं था, बल्कि वे शिक्षा, प्रतिभा, व्यवसाय, विज्ञान, प्रशासन और सामाजिक संगठन के माध्यम से जैन समाज को एक नई पहचान दिलाना चाहते थे। 15 नवम्बर 2020 को राजस्थान के बारां में आचार्यश्री ने समाधिमरण किया। 15 नवम्बर 2026 को उनका सप्तम समाधि स्मृति दिवस है। इस अवसर पर उनके बहुआयामी व्यक्तित्व और विशेष रूप से जैन प्रोफेशनल्स को संगठित करने के उनके दूरदर्शी चिंतन का स्मरण अत्यंत प्रासंगिक है।

## जैन प्रोफेशनल्स को संगठित करने की दूरदर्शी परिकल्पना

आचार्यश्री की एक महत्वपूर्ण सोच थी कि जैन समाज में डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी, बैंक अधिकारी, न्यायाधीश, अधिवक्ता, प्रशासनिक अधिकारी, वैज्ञानिक एवं अन्य उच्च शिक्षित प्रतिभाएं बड़ी संख्या में हैं। आवश्यकता है इन सभी को एक मंच पर लाकर उनकी व्यावसायिक दक्षता को धर्म प्रभावना, समाजोत्थान और राष्ट्र निर्माण से जोड़ने की। उनका मानना था कि यदि समाज की शिक्षित एवं सक्षम प्रतिभाएं संगठित होकर कार्य करें तो अहिंसा, शाकाहार, अपरिग्रह, नैतिकता और जैन संस्कृति के संदेश को व्यापक स्तर पर पहुंचाया जा सकता है। इसी चिंतन को मूर्त रूप देने के लिए उनके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से विभिन्न व्यावसायिक संगठनों और फाउंडेशनों को प्रोत्साहन मिला। डॉक्टर फाउंडेशन, सीए फाउंडेशन, सीएस फाउंडेशन, इंजीनियर्स फोरम, बैंकर्स फोरम , जज एवं एडवोकेट फाउंडेशन तथा आईएएस-आईपीएस फाउंडेशन जैसी संस्थागत पहलों ने जैन प्रोफेशनल्स को एक साझा मंच प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह केवल व्यावसायिक लोगों का एकत्रीकरण नहीं था, बल्कि अपनी प्रतिभा, संसाधन और अनुभव को समाज एवं धर्म के लिए समर्पित करने का एक व्यापक अभियान था।

## अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम : संगठनात्मक चिंतन का सशक्त उदाहरण

आचार्यश्री की प्रेरणा से विकसित जैन प्रोफेशनल्स की संस्थाओं में 27 जून 2013 को गठित अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम का विशेष स्थान है। देशभर के विभिन्न बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों में कार्यरत जैन अधिकारियों और कर्मचारियों को एक मंच पर लाने की यह पहल आज संगठनात्मक एकता का उल्लेखनीय उदाहरण बन रही है। फोरम के माध्यम से बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत जैन बंधुओं के बीच परस्पर परिचय, सहयोग, प्रतिभा संवर्धन, धार्मिक जागरूकता तथा सामाजिक दायित्वों के निर्वहन की भावना को प्रोत्साहन मिला है। इस संगठन से मेरा स्वयं का लगभग आठ वर्षों से सक्रिय जुड़ाव रहा है। उल्लेखनीय है कि 7 अक्टूबर 2018 को गठित जयपुर इकाई देश की सबसे बड़ी इकाइयों में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। इस प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि आचार्यश्री ने जिस संगठनात्मक बीज का रोपण किया था, वह आज विभिन्न शहरों में सक्रिय सहभागिता और सामाजिक



सरोकारों के रूप में विकसित हो रहा है। यह उनके विचारों की दूरदर्शिता और प्रेरणा की सार्थकता का परिचायक है। आचार्य श्री के सानिध्य में हुए झाझीरामपुरा एवं बसवा में पंचकल्याण में बैंकिंग पर चिंतन , दौसा जेल में प्रवचन , जयपुर में बैंकिंग समस्याओ के समाधान हेतु क्षेत्र वार व्यवस्थाएं , जनकपुरी मंदिर में प्रवास तथा अल्पसंख्यक परिलाभों का प्रसार , पदमपुरा में वृहत सम्मेलन , जहाजपुर में ऐतिहासिक पंचकल्याण सहित बहुत से आयोजन यादगार रहे है ।

## तीर्थंकर आदिनाथ एजुकेशनल ट्रस्ट : शिक्षा और समाजोत्थान की महत्वपूर्ण पहल

अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम के संगठनात्मक चिंतन का एक महत्वपूर्ण परिणाम तीर्थंकर आदिनाथ एजुकेशनल ट्रस्ट का गठन भी है। 27 अक्टूबर 2013 को आचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित अखिल भारतीय जैन बैंकर्स के राष्ट्रीय सम्मेलन में शिक्षा के क्षेत्र में संगठित प्रयास करने का निर्णय लिया गया। इसी निर्णय को आगे बढ़ाते हुए 1 जनवरी 2014 को तीर्थंकर आदिनाथ एजुकेशनल ट्रस्ट का गठन हुआ। अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम और तीर्थंकर आदिनाथ एजुकेशनल ट्रस्ट, आचार्यश्री की उस दूरदर्शी सोच के दो महत्वपूर्ण आयाम हैं, जिनमें व्यावसायिक दक्षता को शिक्षा, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा गया।

## इंजीनियर्स फोरम: तकनीकी प्रतिभा का सामाजिक उपयोग

इसी क्रम में जैन इंजीनियर्स फोरम भी सराहनीय कार्य कर रहा है। इंजीनियरिंग क्षेत्र से जुड़े जैन प्रोफेशनल्स को एकजुट कर तकनीकी ज्ञान, अनुभव, नवाचार और सामाजिक सहयोग को प्रोत्साहित करना इस मंच की महत्वपूर्ण दिशा है। जयपुर के ई. प्रेम चंद जैन छाबड़ा जी इस फोरम के प्रमुख पदाधिकारियों में शामिल हैं और संगठनात्मक गतिविधियों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे मंच आचार्यश्री की उस परिकल्पना को आगे बढ़ाते हैं, जिसमें प्रत्येक पेशेवर अपनी योग्यता को समाज की सामूहिक शक्ति बनाने का माध्यम समझे।

## ज्ञानसागर साइंस फाउंडेशन : विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

आचार्यश्री के चिंतन का एक महत्वपूर्ण पक्ष विज्ञान और अध्यात्म के बीच समन्वय स्थापित करना भी था। इसी दृष्टि से ज्ञानसागर साइंस फाउंडेशन की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों और समाज के बीच संवाद स्थापित करना तथा प्राचीन वैज्ञानिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में समझना और जनकल्याण के लिए उपयोगी बनाना है।

## सराक समाज के उत्थान में ऐतिहासिक योगदान

आचार्यश्री को सराकोद्धारक की उपाधि उनके सराक समाज के उत्थान के लिए किए गए उल्लेखनीय कार्यों के कारण मिली। झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल सहित विभिन्न क्षेत्रों में निवासरत सराक बंधुओं की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पहचान को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने विशेष प्रयास किए। शिक्षा, धार्मिक संस्कार, सामाजिक जागरूकता और संगठनात्मक गतिविधियों के माध्यम से उन्हें जैन समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया। आचार्य श्री का उनके ही क्षेत्र में उन जैसी परिस्थितियों में प्रवास कर उनको जोड़ना उनकी कार्य शैली का सशक्त उदाहरण है । उनकी प्रेरणा से शिक्षा केंद्र, सिलाई केंद्र और प्रशिक्षण गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला। महिलाओं और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने तथा नई पीढ़ी को अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने की दिशा में भी प्रयास हुए।

## जिनवाणी संरक्षण और साहित्य संवर्धन

आचार्यश्री का साहित्य एवं स्वाध्याय के प्रति विशेष अनुराग था। वे मानते थे कि समाज की वास्तविक समृद्धि उसके ज्ञान, संस्कार और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में निहित है। संस्कृति संरक्षण संस्थान, श्रुत संवर्धन संस्थान मेरठ, प्राच्य श्रमण भारती मुजफ्फरनगर तथा आचार्य शांतिसागर छाणी ग्रंथमाला जैसी संस्थाओं के माध्यम से जैन साहित्य के प्रकाशन, प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण तथा जिनवाणी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन मिला। उनका प्रयास था कि जैन दर्शन का ज्ञान केवल मुनियों और विद्वानों तक सीमित न रहे।

## जीवन परिचय एवं आध्यात्मिक यात्रा

आचार्यश्री का जन्म 1 मई 1957 को मध्यप्रदेश के मुरैना में श्री शांतिलाल जी जैन एवं श्रीमती अशर्फी देवी जी जैन के परिवार में हुआ। उनका गृहस्थ जीवन का नाम उमेश कुमार जैन था। 5 नवम्बर 1976 को सोनागिर जी में उन्होंने क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की। इसके पश्चात 31 मार्च 1988 को आचार्य श्री 108 सुमतिसागर जी महाराज के सान्निध्य में सोनागिर जी में मुनि दीक्षा प्राप्त की। वर्ष 1989 में उपाध्याय पद तथा 27 मई 2013 को बड़ागांव में आचार्य पद प्रतिष्ठित हुआ। वे आचार्य शांतिसागर जी महाराज (छाणी) की परंपरा के षष्ठ पट्टाचार्य बने। 15 नवम्बर 2020 को राजस्थान के बारां में उन्होंने समाधिमरण किया।

## आचार्यश्री की दूरदृष्टि आज भी समाज को दिशा दे रही है

आज जैन समाज के विभिन्न व्यावसायिक संगठन, बैंकर्स फोरम, इंजीनियर्स फोरम तथा अन्य प्रोफेशनल मंच जिस प्रकार अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय हैं, वे आचार्यश्री के चिंतन की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हैं। आचार्यश्री का जीवन हमें तीन महत्वपूर्ण प्रेरणाएं देता है—ज्ञान को संस्कारों से जोड़ें, प्रतिभा को संगठन से जोड़ें और संगठन को समाज एवं धर्म की सेवा से जोड़ें। ऐसे त्यागमूर्ति, तपोनिधि, सराकोद्धारक, साहित्य मनीषी एवं जैन समाज के दूरदर्शी मार्गदर्शक आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज के सप्तम समाधि स्मृति दिवस पर उनके श्रीचरणों में विनयांजलि एवं शत-शत नमन।

**विनयांजलि! श्रद्धांजलि! शत-शत नमन!**

**लेखक : पदम जैन बिलाला-कार्याध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर इकाई**